महाभागवत भगवान पराशर
षड्वर्णः सुमहामन्त्रः स एव कल्प भूरुहः।
ब्रह्मागस्त्यावृषी प्रोक्ता विश्वामित्र वशिष्ठ कौ ॥५२८॥
नारदो वामदेवश्च भरद्वाज पराशरौ।
वाल्मीकिर्ऋषयः प्रोक्ताः देवः तस्य रघूद्वहः ॥५२९॥
अर्थात - श्रीराम का यह षडक्षर महामन्त्र (रां रामाय नमः) है,
यही महान् कल्पवृक्ष है। इसके ब्रह्मा, अगस्त्य, विश्वामित्र,
वशिष्ठ, नारद, वामदेव, भरद्वाज, पराशर तथा वाल्मीकि
आदि ऋषि हैं। इस मन्त्र के तथा इन ऋषियों के
इष्ट देवता श्री रघुनन्दन राम ही हैं।

■ भगवान पराशर - एक रसिक के रूप में

(रामोपासना की रसिक परम्परा)

■ भाग-१

◆ श्रीराम-रसिक श्री पराशर जी

◆ मङ्गलाचरणम् - रामभक्त श्री पराशर जी को कोटि-कोटि नमन्

राममन्त्रप्रदं श्रीमद्राममन्त्रार्थ कोविदम्।

वन्दे पराशराचार्यं शक्तिपुत्रं जगद्गुरुम् ॥१॥

#अर्थात - जो 'राम' नाम का (षडक्षर) मन्त्र (श्रीराम-मन्त्र - 'रां रामाय नमः') प्रदान करने वाले हैं, जो ज्ञान के समुद्र तथा श्री राम-मन्त्रार्थ (राम-मन्त्र के अर्थ) का बोध कराने वाले प्रकाण्ड विद्वान हैं - ऐसे मुनि शक्ति के पुत्र और समस्त संसार के गुरु आचार्य पराशर को मैं वन्दन करता हूँ।

रामसेवारतं शश्वद् वेदव्यासस्य सद्गुरुम्।

वन्दे पराशराचार्यं शक्तिपुत्रं जगद्गुरुम् ॥२॥

#अर्थात - जो भगवान श्रीराम की सेवा में रत रहने वाला है, जो चिरस्थायी भगवान वेदव्यास के सद्गुरु हैं - ऐसे मुनि शक्ति के पुत्र और विश्वगुरु आचार्य पराशर को मैं वन्दन करता हूँ।

पराशरं वशिष्ठस्य पौत्रं धर्मविदांवरम् ।

रामप्रपन्नयोगीन्द्रः स्वाचार्य प्रणमाम्यहम् ॥३॥

#अर्थात - वशिष्ठ के पौत्र पराशर धर्म को जानने वालों में श्रेष्ठ हैं। उन राम-प्रपन्न (राम की शरण में आये हुए), योगियों में श्रेष्ठ, अपने आचार्य (पराशर) को मैं प्रणाम करता हूँ।

मुनीन्द्रं रामनिष्ठं च जटोर्ध्वपुण्डधारकम्।

वन्दे पराशराचार्यं शक्तिपुत्रं जगद्गुरुम् ॥४॥

#अर्थात - जो मुनियों में श्रेष्ठ हैं, जो भगवान श्रीराम में निष्ठा रखने वाले हैं, जो सिर पर जटा और मस्तक पर ऊर्ध्वपुण्ड्र को धारण करने वाले हैं - उन मुनि शक्ति के पुत्र एवं जगद्गुरु आचार्य पराशर को मैं वन्दन करता हूँ।

- श्रीपराशरषट्कम् स्तोत्र

■ ब्राह्मण शिरोमणि मन्त्रद्रष्टा श्री पराशर जी का राजा मनोजव को भगवान श्रीराम के 'एकाक्षरी मन्त्र' तथा 'ब्रह्मास्त्र' के गुह्य ज्ञान देने का स्कन्द पुराण में वर्णन -

ततः पराशरमुनिः सर्वानर्थविनाशनम् ।

रामस्यैकाक्षरं मत्रं तदंते समुपादिशत् ॥९२॥

चत्वारिंशद्दिनं तत्र मंत्रमेकाक्षरं नृपः।

तत्र तीर्थे जजापासौ मुन्युक्तेनैव वर्त्मना ॥९३॥

तस्मै नृपतये तत्र ब्रह्माद्यस्त्रं महामुनिः ।

सांगं च सरहस्यं च सोत्सर्गं सोप संहृति ॥१०४॥

(पराशरस्तदा राज्ञे ब्रह्माद्यस्त्रं समन्त्रकम् ।

साऽङ्गं च सरहस्यं च सोत्सर्गं सोपसंहृतिम् ॥६३॥

- लक्ष्मीनारायण संहिता, खण्ड-१, अध्याय-४३७)

उपादिशच्छक्तिपुत्रः सुमित्राजानये तदा।

मनोजवोऽथ मुनिना ह्याशीर्वादपुरःसरम् ॥१०५॥

प्रेरितो रथमास्थाय प्रणम्य मुनिपुंगवम् ।

प्रदक्षिणीकृत्य तदाभ्यनुज्ञातो महर्षिणा ॥१०६॥

सार्द्धं पत्न्या च पुत्रेण प्रययौ विजयाय सः।

स गत्वा स्वपुरं राजा प्रदध्मौ जलजं तदा ॥१०७॥

#अर्थात - तत्पश्चात #मुनि_पराशर ने राजा को 'श्री राम जी' के 'एकाक्षर मन्त्र' का, जो सब अनर्थों का नाश करने वाला है, उपदेश दिया।👉 राजा ने चालीस दिनों तक विधिपूर्वक उस 'एकाक्षर मन्त्र' का जप किया।

★ महामुनि पराशर ने राजा को साङ्ग और सरहस्य प्रयोग और उपसंहार की विधि के साथ 'ब्रह्मास्त्र' का उपदेश दिया।👈 राजा ने रथ से उतरकर शक्तिपुत्र मुनिश्रेष्ठ (#पराशर) को प्रणाम किया और आशीर्वाद ले उनकी आज्ञा पाकर तथा उनकी परिक्रमा करके वे पत्नी और पुत्र के साथ विजय के लिए उस रथ पर आरूढ़ हुए। नगर में पहुँचकर राजा ने शंख बजाया।

- स्कन्द पुराण, ब्रह्म खण्ड ३,

सेतु महात्म्य, अध्याय १२

#नोट - सदाशिवस्वरूप प्रासाद मन्त्र इशानादि पाँच ब्रह्ममूर्तियों 【ब्रह्मात्मक अङ्गों (मुखों)】 से युक्त होता है; अतः वह 'पञ्चाङ्ग' या 'साङ्ग' कहा गया है (साङ्ग मन्त्र के बीज इस्व स्वरों से भेदित होते हैं। ईशानादि मूर्तियाँ इन बीजों के अमृततरु हैं। इनका पूजन समस्त विघ्नों का नाश करने वाला है। ॥२०-२२॥ - अग्निपुराण, अध्याय-३१७)

■ भाग -२

■ रसिक - भगवान राम की मधुर भाव में उपासना करने वाले भक्तों को 'रसिक' कहते हैं। और इसलिए 'राम-भक्तों' का यह सम्प्रदाय 'रसिक सम्प्रदाय' कहलाता है। रसिक सम्प्रदाय की परम्परा परम् प्राचीन है। इस सम्प्रदाय में वसिष्ठ, 👉 #पराशर, व्यास, शुकदेव - आदि ऋषि-मुनि भी आते हैं।

● श्री सम्प्रदाय - श्री सम्प्रदाय की मूल प्रवर्तिका श्री सीता जी हैं। उन्होंने सबसे पहले इस सिद्धान्त का उपदेश देवस्वभावी हनुमान जी को दिया और भगवान आंजनेय के द्वारा इस मन्त्र का प्रचार हुआ। इसलिए इसका नाम 'श्री' सम्प्रदाय है और उपदेश मन्त्र को 'रामतारक' कहते हैं। श्री सम्प्रदाय का सिद्धान्त 'विशिष्टाद्वैत' है।

श्रीरामंजनकाङ्गजं पवनजं वेधोवशिष्ठौ वरौ।

श्रीमन्तञ्च पराशरं श्रुतिपथं द्वैपायनं श्रीशुकम् ॥

● अतः प्रथम भगवान श्रीराम जी ने श्री जानकी जी को षडक्षर मन्त्रराज (रां रामाय नमः) प्रदान किया है, फिर श्री जानकी जी ने श्री हनुमान जी को दिया है। पुनः श्री हनुमान जी ने 'श्रीराममन्त्र' का उपदेश ब्रह्मा जी को दिया। अनन्तर ब्रह्मा, वसिष्ठ, #पराशर, व्यास, शुकदेव द्वारा क्रमशः इस भूलोक में मन्त्रराज का प्रचार हुआ।

👉 'श्री महारामायण' में दी गयी 'रसिक सम्प्रदाय परम्परा' अथवा 'श्री सम्प्रदाय परम्परा' इस प्रकार है -

१. श्री राम जी

२. श्री सीता जी

३. श्री हनुमान जी

४. श्री ब्रह्मा जी

५. श्री वसिष्ठ जी

६. #श्री_पराशर_जी 👈👈

७. श्री व्यास जी

८. श्री शुकदेव जी

९. श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी

१०. श्री गङ्गाधराचार्य जी

११. श्री रामेश्वराचार्य जी

१२. श्री द्वारानन्द जी

१३. श्री देवानन्द जी

१४. श्री श्यामानन्द जी

१५. श्री श्रुतानन्द जी

१६. श्री चिदानन्द जी

१७. श्री पूर्णानन्द जी

१८. श्री श्रियानन्द जी

१९. श्री हर्यानन्द जी

२०. श्री रामानन्द जी

२१. श्री अनन्तानन्द जी

२२. श्रीकृष्णदास जी

अतः कहा भी गया है कि -

(क) गीतानन्द्भाष्यम् के अनुसार

श्रीरामं जनकात्मजामनिलजं वेधोवशिष्ठावृषी

योगीशं च पराशरं श्रुतिविदं व्यासं जिताक्षं शुकम्।

श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान् यतीन्।

श्रीमदराघवदेशिकं च वरदं स्वाचार्यवर्यं श्रये ॥७॥

#अर्थात - श्री राम जी, श्री जानकी जी, श्री हनुमान जी, ब्रह्मा जी, वशिष्ठ जी, #श्री_पराशर_जी, वेदविद् व्यास जी, जितेन्द्रिय शुकदेव जी, बोधायनवृतिकार श्री पुरुषोत्तमाचार्य बोधायन, गङ्गाधराचार्य, सदानन्द रामेश्वरानन्द, द्वारानन्द, देवानन्द, श्यामानन्द, श्रुतानन्द, चिदानन्द, पूर्णानन्द, श्रियानन्द, हर्यानन्द इत्यादि यतियों और अपने वरदायक आचार्यवर्य श्री राघवानन्द जी का मैं आश्रय लेता हूँ। ॥७॥

- गीता आनंदभाष्य

(जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी द्वारा कृत)

(ख) श्रीमैथिलीमहोपनिषद् के अनुसार

इममेव मनुं पूर्वं साकेतपतिर्मामवोचत्।

अहं हनुमते मम प्रियाय प्रियतराय। स वेद वेदिने ब्रह्मणे। स वशिष्ठाय। स पराशराय । स व्यासाय । स शुकाय । इत्येषोपनिषत् । इत्येषाब्रह्मविद्या ।

#अर्थात - (प्रकृत उपनिषद् में लाट्यायन प्रभृति महर्षियों को विशिष्ट तत्वोपदेशान्तर श्रीराम

महामन्त्रराज की परम्परा के विषय में सर्वेश्वरी श्रीसीताजी कहती हैं -)

★ यहीं षडक्षर श्रीराम महामन्त्र को दिव्यलोक में श्रीसाकेताधिनायक सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्र जी ने मुझे कहा अर्थात सविधि उपदेश दिया। मैंने मेरे प्रियातिप्रिय सेवक मरुतनन्दन श्रीहनुमान जी को यथाशास्त्र विधि विधान से उपदेश दिया। श्री हनुमान जी ने भी शास्त्रीय विधान से वेद के ज्ञाता श्रीब्रह्मा जी को उपदेश दिया।

👉 श्री ब्रह्माजी ने भी शास्त्र विधान के अनुसार ही स्वमानस पुत्र श्री वशिष्ठ जी को उपदेश दिया। श्री वशिष्ठ जी ने शास्त्रीय विधि से श्री पराशर जी को उपदेश दिया। 👈 श्री #पराशर जी ने शास्त्र विधान के अनुसार श्री व्यास जी को उपदेश दिया। 👈

श्री व्यास जी ने शास्त्र विधानानुसार श्री शकदेव जी को उपदेश दिया। यहीं उपनिषद् श्रीरामचन्द्र जी के दिव्यधाम श्रीसाकेत में जाने का साधन है यानी शास्त्रीय विधि से श्रीगुरुमुख से प्राप्त तारक श्रीराम महामन्त्र के अनुष्ठान से ही सायुज्य मुक्ति या श्रीराम प्राप्ति की जा सकती है अन्य साधनों से नहीं। यहीं ब्रह्मविद्या है।

- श्रीमैथिलीमहोपनिषद्

(ग) अगस्त्य संहिता के अनुसार

ब्रह्माददौ वशिष्ठाय स्वसुताय मनुं ततः।

वशिष्ठोऽपि स्वपौत्राय दत्त्वान् मन्त्रमुत्तमम् ॥

पराशराय रामस्य मन्त्रं मुक्तिप्रदायकम्।

स वेदव्यासमुनये ददावित्थं गुरुक्रमः ॥

वेदव्यासमुखेनात्र मन्त्रो भूमौ प्रकाशितः।

वेदव्यासो महातेजः शिष्येभ्यः समुपादिशत् ॥

- अगस्त्य संहिता

प्रस्तुत अगस्त्य संहिता के शलोकानुसन्धान से यहीं अवगत होता है की (श्रीराम मन्त्र प्रदान करने का यह क्रम - ब्रह्मा, वशिष्ठ, #पराशर, वेदव्यास, शकदेव) श्री वशिष्ठ संहिता अनुकूल ही है।

■ भाग-३

■ भगवान श्रीराम के षड्क्षर महामन्त्र के ऋषि - मुनिश्रेष्ठ ब्रह्मर्षि पराशर

◆ भगवान श्रीराम के अष्टाक्षर मन्त्र की महिमा -

सिद्धाः शेषादयश्च व लोमशाद्याः मुनीश्वराः।

लक्ष्म्यादि शक्तयः सर्वाः नित्यमुक्ताश्च सर्वदा ॥५२६॥

मुमुक्षवश्च मुक्ताश्च सुरयश्च शुकादयः।

तत्प्रभावं परं ज्ञात्वा मन्त्रराजमुपासते ॥५२७॥

#अर्थात -"श्रीरामः शरणं मम" इसी श्रीराम अष्टाक्षर मन्त्र से श्रेष्ठ कोई मन्त्र नहीं है। सूर्य-शक्ति-शिवादिकों के मन्त्र इसके सामने प्रत्यन्त हीन स्वरूप हैं, यह स्पष्ट ही है, इसी कारण श्रीमन्नारायण, स्वयम्भू ब्रह्मा जी, शंकर जी तथा इन्द्रादिक देवगण, सनकादिक योगीन्द्रजन, नारदादिक महर्षि, शेष भगवान आदि सिद्धजन, लोमशादिक मुनीश्वर, श्री लक्ष्मी जी आदि शक्तियां, दिव्यधाम निवासी नित्य मुक्त भगवत्पार्षद, मोक्ष-कामी सन्तजन, शुकदेवादिक सूरिगण, इसका महान् प्रभाव जानकर निरन्तर इसी की उपासना करते हैं। ॥ ५२४-५२७॥

◆ भगवान श्रीराम के कल्पवृक्ष रूपी षडक्षर मन्त्र के ऋषियों (ब्रह्मर्षि पराशर) तथा इष्टदेवता (भगवान श्रीराम) का वर्णन -

षड्वर्णः सुमहामन्त्रः स एव कल्प भूरुहः। ब्रह्मागस्त्यावृषी प्रोक्ता विश्वामित्र वशिष्ठ कौ ॥५२८॥

नारदो वामदेवश्च भरद्वाज पराशरौ । 👈

वाल्मीकिर्ऋषयः प्रोक्ताः देवः तस्य रघूद्वहः ॥५२९॥

इममेव जपन्मन्त्र रुद्रस्त्रिपुरघातकः।

ब्रह्महत्यादिनिर्मुक्तः पूज्यमानोऽभवत् सुरैः॥५३३॥

अद्यापि काश्यां रुद्रस्तु सर्वेषां त्यक्तजीविनाम् ।

दिशत्येतन्महामन्त्रं तारकं ब्रह्मनामकम् ॥५३५॥

तस्य श्रवणमात्रेण सर्व एव दिवंगताः। ॥५३६.१॥

#अर्थात - श्रीराम का यह षडक्षर महामन्त्र (रां रामाय नमः) है, यही महान् कल्पवृक्ष है। इसके ब्रह्मा, अगस्त्य, विश्वामित्र, वशिष्ठ, नारद, वामदेव, भरद्वाज , 👉 पराशर तथा वाल्मीकि आदि ऋषि हैं। इस मन्त्र के तथा इन ऋषियों के इष्ट देवता श्री रघुनन्दन राम ही हैं। ॥५२८- ५२९॥

इसी मन्त्र के जप के प्रभाव से शंकर जी त्रिपुरासुर को मारने में समर्थ हुए हैं तथा ब्रह्महत्यादिक पापों से विमुक्त होकर देवताओं के द्वारा पूजित हुए। ॥५३३॥

अब भी शंकर जी काशी में सब शरीर त्यागने वालों के दाहिने कान में श्रीराम नाम तारक महामन्त्र का उपदेश करते हैं, जिसके सुनने मात्र से वे परम धाम जाते हैं। ॥५३५, ५३६.१॥

◆ भगवान श्रीराम के षडक्षर मन्त्र की महिमा का वर्णन -

षडक्षरं दाशरथेस्तारकब्रह्म कथ्यते।

सर्वैश्वर्यप्रदं नृणां सर्वकामफलप्रदम्। ॥६१७॥

एतमेव परं मन्त्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवताः।

ऋषयश्च महात्मानो मुक्ता जप्त्वा भवाम्बुधौ ॥६१८॥

#अर्थात - श्री दशरथनन्दन परब्रह्म श्रीराम का "रां रामाय नमः" यही षडक्षर मन्त्र तारक ब्रह्म कहाता है। जो मनुष्यों को सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करने वाला तथा सभी कामनायें सुफल करने वाला है । इसी परम मन्त्र का जप कर ब्रह्मा, रुद्र आदि देवगण, ऋषि तथा महात्मा मुक्त होकर भवसागर से तर गए हैं। यहीं मन्त्र सभी लोकों को परमऐश्वर्य प्रदान करने वाला है। ॥६१७-६१८॥

- श्रीराम परत्त्वम् श्रीरामपरत्त्व प्रतिपादक आधार ग्रन्थ

◆ रामोपासक भगवान श्री पराशर जी को नमन्।